वह उम्र ही कुछ और थी, वह रंग ही कुछ और था

प्यारे नन्हे दोस्तो,

मैं भी बचपन में तुम लोगों की तरह चंचल था. मैं और मेरा भाई खूब पढ़ाई करते और जम कर ऊधम मचाते. बात तब की है जब मैं १०–११ साल का था. होली आनेवाली थी और हम दोनों भाइयों को बुखार आ गया.

होली के दिन हम लोगों ने जिद करनी शुरू की, कि हम होली खेलेंगे. पिता जी ने साफ मना कर दिया. हम लोग उदास तो बहुत हुए लेकिन होली खेलने की कोई तरकीब सोचने लगे. एकाएक मैंने अपने भाई के कान में एक बात कही. हम दोनों उठे और खुश-खुश अपने कमरे में चले गये.

थोड़ी देर बाद जब हम बाहर आये तो हमें देख कर पिता जी हंसने लगे. जानते हो क्यों? हम दोनों ने अपनी-अपनी बरसातियां पहन रखी थीं और सर पर पानी से बचने के लिए प्लास्टिक की टोपियां.

हमारा यह रूप और उत्साह देख कर पिता जी ने हमें होली खेलने जाने दिया लेकिन हम लोगों ने भी पिता जी की बात रखी और बरसाती पहने-पहने ही होली खेली. बस, होली का मजा भी आ गया और हम भीगे भी नहीं.

बचपन की एक और मजेदार घटना सुनाता हूं. हमारे घर में एक 'ब्लैक बोर्ड' लगा था. अकसर मेरे चाचा जी रात में, उस पर गणित की कोई समस्या लिख देते और मैं सबेरे स्कूल जाने से पहले उसे हल करता. हल ठीक होता तो मुझे इनाम मिलता.

एक दिन जब मैं सो कर उठा तो देखा कि 'बोर्ड' पर दो जगह कुछ संख्याएं लिखी थीं और नीचे उनका योग लिखा हुआ था. मैंने बहुत सोचा लेकिन मेरी समझ में नहीं आया कि यह कैसा सवाल है और उसका हल क्या होगा!

पूरे दिन मैं स्कूल में भी उसी समस्या के बारे में सोचता रहा. देखने से तो वह बड़ी ही सीधी सी चीज लग रही थी, लेकिन चाचा जी मुझे सिर्फ दो जोड़ी संख्याओ का जोड़ जंचने को तो देते नहीं. फिर क्या हो सकती थी वह गणित की समस्या!

शाम को स्कूल से आ कर मैंने बड़ी ही मायूस आवाज में चाचा जी से कहा, 'मुझे आज का सवाल ही समझ में नहीं आया.'

चाचा जी ने पूछा, 'कौन-सा सवाल? आज तो मैंने कोई सवाल लिखा ही नहीं था.'

मैं उन्हें अंदर ले गया तो वे 'बोर्ड' को देख कर जोर-जोर से हंसने लगे और बोले, 'यह कोई सवाल थोड़े ही है, यह तो भारत और इंग्लैंड के बीच हो रहे क्रिकेट मैच की पहली पारी की रन संख्याएं और उनके जोड़ हैं.'

आज भी जब उन दिनों की याद आती है तो बड़ा मजा आता है.

तुम्हारा दोस्त,
जयंत नारलीकर